Paper - II

MT

2017 1100

MT - HINDI (COMPOSITE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - II - PAPER - II

Time : 2 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 40**

विभाग 1 - गद्य

उ.1. क) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

1) आकृति पूर्ण कीजिए। **2**

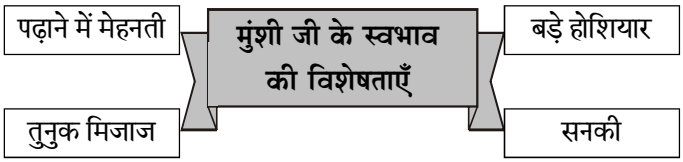

2) i) **सही शब्द तैयार कीजिए।** **1**

(1) तु | जा | ज | नु | क | मि = तुनुकमिजाज

(2) र | द | से | म = मदरसे

ii) **पर्यायी शब्द लिखकर आकृति पूर्ण कीजिए ।** **1**

(1) मेहनती → परिश्रमी

(2) खुदा → ईश्वर

3) मृत व्यक्ति की आत्मा को शांति प्रदान करने के लिए उनके सगे-संबंधी एकत्रित होते हैं। वे अपनी आँखे बंद कर कुछ मिनट का मौन धारण करते हैं तथा मृत व्यक्ति की आत्मा को शांति प्रदान करने के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं। वे उस समय ईश्वर से निवेदन करते हुए कहते हैं कि हे प्रभु! मृतक व्यक्ति के परिवार के लोगों को इस संकट की घड़ी में शक्ति प्रदान करना। **2**

उ.1. ख) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **2**

1) उचित जोड़ लगाइए ।

i) 29 नवंबर, 1928

ii) 06 जनवरी, 1929

iii) 23 मार्च, 1929

iv) 24 मार्च, 1931

2) निम्नलिखित शब्दों के लिए विलोम शब्द परिच्छेद से ढूँढ़कर लिखिए :- **2**

i) सुअवस्था × दुरावस्था

ii) पराए × अपने

iii) अस्वीकार × स्वीकार

iv) सधनता × निर्धनता

3) समाज सुधारक : गाडगे बाबा **2**

महाराष्ट्र के शेंडगाव निवासी गाडगे बाबा स्वच्छता के बादशाह थे। उन्होंने नारी शिक्षा की दिशा में पहल की। दलितों के शिक्षा अभियान में जुटे रहे। रुढ़ियों के जंजाल से उन्होंने धर्म को मुक्त किया। लोगों के साथ हो रहे अन्याय, असत्य, अंधश्रद्धा को रोका। कर्मकांड का विरोध किया। छूआछूत को पाप माना और हिंदू धर्म का कलंक कहा, अनेक सार्वजनिक कुओं का निर्माण किया। गरीबों को शिक्षा, भूखे को रोटी, प्यासे को पानी, दुखी लोगों को हिम्मत बाबा ने दिलाई। समाज से अमंगल को हटाने के लिए बाबा ने कोशिश की। समाज में सद्वर्तन से परिवर्तन जगाया। इस तरह वे समाज के लिए समर्पित हो गए।

विभाग 2 - पद्य

उ.2. (च) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) उत्तर लिखिए। **2**

i) (1) असंख्य भौतिक साधनों का निर्माण।

(2) यंत्र और वायुयान का निर्माण।

ii) (1) उत्पीड़न बढ़ गया।

(2) मानव जीवन अशांत हो गया।

2) सही शब्द तैयार कीजिए। **1**

i) न | ज्ञा | वि | न | ज्ञा = विज्ञानज्ञान

ii) ल | ब | न | ध = धनबल

3)	जैसे-जैसे मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती गईं वैसे-वैसे वह नए-नए आविष्कार करता गया। पहले मनुष्य दूर-दूर की यात्राएँ पैदल करता था लेकिन आज बस, कार, ट्रेन, और जहाज का प्रयोग कर रहा है। रात में घर में रोशनी के लिए दीपक जलाता था लेकिन आज बिजली से पूरा-का-पूरा देश जगमगा रहा है। आज हम घर बैठे-बैठे दूर दराज रहने वाले व्यक्ति से बात कर सकते हैं। इसका कारण है, विज्ञान के क्षेत्र में तरक्की।	2
उ.2.	**(छ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	
1)	i) **उत्तर लिखिए।** (1) कुँवर कन्हाई के रंग जैसा। (2) जामुन के रंग जैसा।	1
	ii) **उचित पर्याय लिखिए।** (1) चैत्र (2) कोकिल जैसा	1
2)	**पर्यायी शब्द लिखकर आकृति पूर्ण कीजिए ।** i) सर्दी → जाड़ा ii) प्रतिदिन → नित्य	1
3)	तोता हमारे देश में प्राचीनकाल से ही एक लोकप्रिय पक्षी रहा है। यह बहुत समझदार होता है, तोते का हरा रंग, लाल चोंच, कंठ में काली पट्टी और कोमल पंख लोगों को मुग्ध कर देते हैं। चिड़िया घरों में तोते की कई जातियाँ पाई जाती हैं। तोते को पालना बहुत आसान है, यह अमरूद व अन्य फल तथा मिर्च बड़े चाव से खाता है और यह परिवार में सभी के साथ हिल-मिल जाता है।	2
	विभाग - 3 - व्याकरण	
उ.3.	**पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	
1)	**मानकवर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द पहचानिए ।** (i) अवश्य (ii) मूर्खता	1
2)	**निम्नलिखित अव्यय का अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **काश !** आज बरसात न होती ।	1
3)	i) **काल पहचानिए ।** पूर्ण भूतकाल	1

	ii) **काल परिवर्तन कीजिए ।** दादा जी बाजार चले गए ।	**1**
4)	i) **अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए ।** जब तक माँ का दिया हुआ काम पूरा नहीं होगा, रमा को **चैन नहीं मिलेगा** ।	**1**
	ii) **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **घुल मिल जाना** - एकरूप होना । **वाक्य** - कितने विदेशी भारत आए और यहाँ के समाज में **घुल मिल गए** ।	**1**

विभाग - 4 - रचना

उ.4. 1) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए । **4**

संजय काले,
3/205,रविनगर,
अचलपुर ।
दि.5 अक्टूबर, 2017

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
साहित्यसदन,
अमरावती ।

विषय :- पुस्तकों की कम प्रतियों की प्राप्ति के लिए शिकायत पत्र ।

माननीय महाशय,

मैं आपका नियमित ग्राहक हूँ । इस पत्र के द्वारा मैं आपका ध्यान मँगाई गई पुस्तकों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ ।

मैने दस दिन पहले ही आपके यहाँ से पुस्तकें मँगवाई थीं । आपके द्वारा भेजा गया पुस्तकों का पार्सल मिला भी लेकिन बड़े दुख के साथ लिखना पड़ रहा है कि पुस्तकें कम हैं । हिंदी व्याकरण और अंग्रेजी की दस - दस प्रतियाँ मँगवाई थीं लेकिन आठ - आठ ही प्राप्त हुई हैं ।

किताबों का केशमेमों क्रमांक. 15 बी. दिनाक 20 सितंबर, 2017 है । बिल की झेरॉक्स कापी पत्र के साथ भेज रहा हूँ ।

आशा करता हूँ कि पत्र मिलते ही आप शेष पुस्तकें भिजवाने की व्यवस्था करेंगे ।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी ।

धन्यवाद !

भवदीय
संजय काले ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
साहित्यसदन,
अमरावती ।

प्रेषक
संजय काले,
3/205,रविनगर,
अचलपुर ।

2) सरल हिंदी में अनुवाद कीजिए । **4**

1. दूसरों से कुछ सबक सीखो ।
2. अपना साहस मत खोओ ।
3. स्वयं पर विश्वास करो ।
4. प्रयास पर प्रयास करते रहो ।

3) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 60 से 80 शब्दों में रोचक कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए । **4**

सच्चा सहयोग

एक समय की बात है । रामू नाम का एक भिखारी था । वह गाँव - गाँव घूमकर भीख माँगता था । एक दिन वह भीख माँगते - माँगते नरायनपुर गाँव में जा पहुँचा । वहाँ मोहन नाम के बच्चे ने जब उस भिखारी को देखा तो उसे बड़ी दया आई वह अपनी माँ के पास गया, अपने पिता जी से छिपाकर कुछ रोटी और साग माँग कर लाया और उस भिखारी को दिया । जिसे खाकर उसे अपार तृप्ति हुई ।

अब वह भिखारी आए दिन मोहन के घर आता । मोहन अपनी माँ से साग - रोटी माँग कर लाता और उसे देता । भिखारी रोटी - साग खाकर बहुत प्रसन्न होता तथा लाख दुवाएँ देता ।

एक दिन मोहन के पिता जी ने मोहन को रोटी - साग देते हुए देख लिया और उसे बहुत डाँटा । उन्होंने भिखारी को पास बुलाया और समझाते हुए कहा, भीख माँग कर खाना अच्छी बात नहीं है । तुम कुछ काम करो और मेहनत के पैसे से अपना जीवन यापन करो । वे उसे कुछ अच्छे कपड़े भी दिए, यही नहीं अपने तथा पड़ोस के बंगले में सफाई का काम भी दिलवाया । रामू मन लगाकर सफाई का काम करने लगा । मोहन के पिता जी ने रामू को काम दिला कर सच्ची सहायता की ।

सीख - इस कहानी से यह सीख मिलती है कि हमें किसी की मदत भिक्षा देकर नहीं बल्कि ऐसी सहायता देकर करनी चाहिए, जिससे वह मेहनत की रोटी खा सके और उसे किसी के सामने हाथ न फैलाना पड़े ।

❖❖❖❖